2 अरहन्त सुमर मन बावरे....

अरहन्त सुमर मन बावरे ।।
ख्याति लाभ पूजा तजि भाई, अन्तर प्रभु लौ लावरे ।।
अरहन्त सुमर मन बावरे ।।टेक ॥

नरभव पाय अकारथ खोवै, विषय भोग जु बढ़ाव रे।
प्राण गये पछितैं है मनुवा, क्षण क्षण छीजै आयु रे ।।1॥
अरहन्त सुमर मन बावरे ।।

युवती तन धन सुत मित परिजन, गज तुरंग रथ चाव रे।
यह संसार स्वपन की माया, आँख मीच बिखराव रे ।।2॥
अरहन्त सुमर मन बावरे ।

ध्याय ध्याय रे अब है अवसर, आतम मंगल गाव रे।
'द्यानत' बहुत कहाँ लौं कहिये, और न कछु उपाव रे ।।3॥
अरहन्त सुमर मन बावरे ।

ए मेरे बावरे मन! अरे मेरे नादान मन! तू अरिहंत के गुणों का स्मरण कर। लाभ और सम्मान की भावना छोड़कर अरे भाई! तू अपने अंतर को अर्थात् मन को प्रभु से जोड़ ले, अंतर में प्रभु की लगन लगा ले, प्रभु की दीपक लौ से अपने को जोड़ ले, एक कर ले अर्थात आत्म स्वरूप में रुचि पूर्वक लीन हो जा॥टेक॥

तू यह मनुष्य जन्म पाकर भी इसे व्यर्थ ही खो रहा है। तू विषय भोग में ही अपने आप को लगाए हुए हैं, उसमें ही वृद्धिंगत है। इस बहुमूल्य आयु का एक-एक क्षण व्यतीत होता जा रहा है अर्थात् मृत्यु समीप आती जा रही है, यदि नही संभला तब जीवन के अंत समय में फिर पछताना होगा॥1॥

स्त्री, शरीर, धन, पुत्र, मित्र, परिवारजन, हाथी, घोड़े, रथ इत्यादि जड द्रव्यों के प्रति तेरी रुचि है। यह संसार तो स्वप्न के समान है, अस्थिर है। आंख बंद करने पर जैसे दिखाई देता है वैसे ही यह काल्पनिक संसार शून्य दिखाई देता है॥2॥

अरे! अब तू आत्मा का ध्यान कर। अभी अवसर है, ऐसा मंगल अवसर फिर प्राप्त नहीं होगा। कविवर द्यानतरायजी कहते हैं कि अधिक क्या कहा जाए? अरे फिर कोई उपाय शेष नहीं बचेगा। हे चंचल मन! अरहंत प्रभु का नाम स्मरण कर॥3॥